[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3577

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

जामिनी राय की कला में रंग योजना की भूमिका

डॉ. श्वेता पाण्डेय
सहायक प्राध्ययापक, ललित कला विभाग,
बुन्देलखण्ड विष्वविद्यालय, झांसी उत्तर प्रदेष

जामिनी राय ने अपनी कला यात्रा के दौरान असंख्य चित्रों का निर्माण किया। इस निर्माण कार्य में शायद ही ऐसा कोई विषय हो जो जामिनी राय की तूलिका के माध्यम से प्रकट ना हो सका हो। कला के प्रति उनका समर्पण व उनकी निरन्तरता के कारण ही उन्होंने इतनी बड़ी संख्या में चित्रों का निर्माण किया। जामिनी राय ने अपने ही चित्रों को कई बार दोहराया है, इसलिये यह कह पाना बड़ा कठिन है कि कौन सा चित्र पहले का है, कौन सा बाद का, सिर्फ शैली को देखकर ही निर्माण काल का अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त जामिनी राय ने अपने चित्रों में कभी भी तिथि का उल्लेख नही किया है, इस कारण यह समस्या और भी जटिल हो जाती है। जामिनी राय ने एक ही विषय पर कई चित्रों को बनाया है जिनमें उन्होंने बाद में कुछ ना कुछ परिवर्तन करते हुए पुनः निर्माण किया। इस प्रकार उन्होंने अपनी कला यात्रा के दौरान अलग–अलग विषयों पर आधारित अनेक खूबसूरत चित्रों का निर्माण किया जिसमें भारतीय मिट्टी की सौंधी महक है। जामिनी राय ने अपनी कलायात्रा के आरम्भ में चित्रों के निर्माण कैनवास व तैल रंगों का प्रयोग किया और बहुत लम्बे समय तक इस विधा से ही कार्य करते रहे। धीरे–धीरे समय के साथ जब जामिनी राय ने अपनी कला यात्रा को एक नई दिशा दी तब उनके जीवन में कई परिवर्तन आ गए। उन्होंने सदैव अपनी कला में नवीनता लाने के लिए नित नए कला प्रयोगों को जारी रखा। जामिनी राय स्वेच्छा से आवश्यकता के अनुसार अपनी कला में परिवर्तन किया करते थे। अपने इन कला प्रयोग की सफलता के प्रति आश्वस्त जामिनी राय ने अपनी सुविधा के अनुसार निरन्तर कार्य करना ही उचित समझा। अपने इन प्रयोगों के लिए उन्हें कई सारे त्याग भी करने पड़े। वर्षों से प्रयोग में लाने के बाद उन्होंने तैल रंग व कैनवास का भी मोह त्याग दिया और देशज (भारतीय) माध्यमों की उपयोगिता को समझ कर उसे पूर्णरूप से अपना लिया। उन्होंने अपने चित्रों के लिए स्वयं धरातल तैयार करना शुरू कर दिया और साथ ही दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को पीसकर या घोलकर बिना किसी रासायनिक क्रिया के स्वयं रंग तैयार किया करते थे। पूर्णतः देशज ढंग से कार्य करने के कारण उनके चित्रों में भारतीय आत्मीयता प्रकट हो गई। जामिनी राय ने अपनी कलायात्रा के दौरान कई माध्यमों में चित्रों का निर्माण किया जामिनी राय ने जब अपनी कला शिक्षा आर्ट्स कॉलेज कलकत्ता में आकर आरम्भ की, तब उन्होंने यूरोपीय शैली में काम करना शुरू किया था। उनके आरम्भिक चित्र तैल चित्रण माध्यम में किये गये है। तैल रंग का प्रयोग उन्होंने कैनवास व बोर्ड दोनों पर ही किया है। उनके द्वारा निर्मित तैल माध्यम के कुछ प्रसिद्ध चित्र निम्नलिखित है– दृश्य चित्र, शान्ति निकेतन, नदी का दृश्य, स्टील लाइफ, लोहार, गाय के साथ कृष्ण, मां व शिशु व नग्न युवती आदि।

जल चित्रण

जामिनी राय ने जलरंग माध्यम से अनेक चित्रण कार्य किया। उनके द्वारा निर्मित कुछ प्रसिद्ध चित्र निम्नलिखित है– मां और शिशु, पार्वती और गणेश सेविकाओं के साथ, गोपिनी, शिवजी और गणेश, हुक्के के साथ आदमी, घोड़ा व दृश्यचित्र आदि।

ग्वास चित्रण

जामिनी राय ने ग्वास माध्यम में अनेक चित्रों का निर्माण किया। उन्होंने अपनी कलायात्रा में ग्वास व टैम्परा दो माध्यमों में सबसे अधिक कार्य किया है। जामिनी राय ने बड़ी संख्या में ग्वास माध्यम में चित्रों का निर्माण किया, उनके द्वारा निर्मित कुछ प्रसिद्ध ग्वास चित्रण निम्नलिखित है– मां और शिशु, नृत्यांगना, कृष्ण, बलराम व ग्वाल बाल गाय के साथ, कृष्ण व यशोदा, हुगली नदी का किनारा (दृश्यचित्र), हुगली नदी का सूर्यास्त, पार्वती व गणेश सेविकाओं के साथ, सीताहरण, लवकुश सीता व वाल्मिकी, गोपिनी, नारी अंकन, दो युवतियां, चार ढोलकिये, नृत्य करते सांथाल, गणेश जननी, हनुमान व जटायु, शिवजी व गणेश, अन्तिम भोज, पांच चित्र (अल्पना), घोड़ा व बिल्ली आदि।

टैम्परा चित्रण

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

टैम्परा शब्द टैम्पर से बना है। शब्दकोष के अनुसार टैम्पर शब्द का अर्थ है किसी वस्तु को दृढता और लचक प्रदान करना। इस चित्रण विधान में रंग कणों को चित्र भूमि पर स्थाई, कठोर तल वाले तथा लचकीले बनाए रखने के लिए टैम्परा बंधको का प्रयोग किया जाता है। लकड़ी, कैनवास, कपड़े आदि पर टैम्परा विधि में कार्य किये हैं। प्राचीन भारतीय परम्परा के संरक्षक के रूप में उन्होंने इस कला विधा के विकास में अमूल्य योगदान दिया। जामिनी राय द्वारा निर्मित टैम्परा विधि में बने प्रसिद्ध चित्र : मां और शिशु, मां, शिशु और दो स्त्रियां, गोपी, नृत्यांगना, ढोलकिया, तीन पुजारिन, मेडोना और शिशु, अप्सरा, कृष्ण बलराम मोर के साथ, रावण, पार्वती व गणेश, कृष्ण व यशोदा, सांथाल ढोलकिया, नृत्य मंडली, बाल बनाती युवती, गोद में बालक को लिये हुए मां, तीन महिला व एक बच्चा, घोड़े पर बैठी महिला, घोड़ा, बिल्ली, अपने बच्चे के साथ बिल्ली, हाथी व उसका बच्चा, व दृश्य चित्र आदि जामिनी राय द्वारा निर्मित टैम्परा विधि में बनाए गए चित्रों की संख्या बहुत अधिक है।

जामिनी राय ने अपनी कला यात्रा के दौरान विभिन्न माध्यमों को अपनाया और साथ ही अपने कार्य में सदैव संशोधन जारी रखा। वे एक प्रयोगवादी कलाकार थे, जिन्होंने सदैव अपने कार्य में नवीनता लाने का सफल प्रयास किया। अपने आरम्भिक काल में जामिनी राय कोलकता शहर में एक प्रसिद्ध व्यक्ति चित्र बनाने वाले चित्रकार थे। उस समय उन्हें अपनी कला के माध्यम से आर्थिक लाभ व प्रसिद्धी दोनों ही मिल रही थी, परन्तु जब उन्होंने यूरोपीय पद्धति से कार्य करना बन्द कर दिया और लोककला को अपनाया, उस समय उन्हें क्षणिक हानि हुई। बाद में उन्होंने अपने कार्य से इस फैसले को सही सिद्ध किया, जिसके कारण आज विश्व भर में उनके काम की चर्चा होती हैं।

जामिनी राय का प्रयोगवादी मन उन्हें कभी भी एक जगह बैठने नहीं देता, बल्कि उन्हें नित नए–नए कार्यों की तरफ आकर्षित करता। शायद यही कारण है कि उन्होंने अपने जीवन काल में इतनी बड़ी संख्या में इतने विविध कार्यों को पूर्ण किया। आर्थिक रूप से कमजोर होने के बाद भी उन्होंने अपनी कला पिपासा को देशज माध्यम की तरफ मोड़ दिया और अपने कार्य को जारी रखा। महंगे कैनवास व तैल रंग जैसी सुविधाओं का त्याग करने में उन्होंने कोई झिझक नहीं दिखाई। जामिनी राय स्वयं अपने हाथों से पुरानी धोती व कपड़ों को जोड़कर चित्रण धरातल का निर्माण करते। कपड़े पर मिट्टी, गोबर व गोंद की सहायता से अपना कैनवास बनाते। उन्होंने लकड़ी के टुकड़े, मोटे कपड़ों, दफ्ती, चटाई, जूट के कपड़े, पटसन व मिट्टी के बर्तनों आदि को धरातल बना कर चित्रण किया।जामिनी राय ने कभी यह नहीं सोचा की इन माध्यमों पर बनाए जाने वाले चित्र ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकते, वे जल्द ही खराब हो सकते हैं। उन्हें तो बस अपनी भावनाओं को रूप देने का कार्य करना था फिर चाहे माध्यम कुछ भी हो। इन माध्यमों में अपने देश की माटी की सौंधी महक थी, जिसमें काम करते हुए जामिनी राय को गर्व होता। उन्होंने भारत की उस अति प्राचीन कला को फिर से जीवन दिया व उसकी महत्ता को लोगों के समक्ष फिर से प्रस्तुत किया। उनके समक्ष जो भी सुविधाजनक माध्यम था, उनका भरपूर उपयोग करते हुए जामिनी राय ने अपनी कला को रूप दिया, जो उस समय के भारतीय कला जगत में अलग कार्य व शैली के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

धरातल को टैम्परा विधि में तैयार करके उस पर प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करके सुन्दर, सरल व भावपूर्ण चित्रों का निर्माण जामिनी राय अपनी विशिष्ठ शैली में किया करते। चित्रों के लिए रंग भी जामिनी राय स्वयं तैयार किया करते। भूरा रंग चिकनी मिट्टी, सफेद रंग चूने को घोलकर, नीला रंग नील से, सिंदूरी लाल सिंदूर से तथा चटख लाल, पीला, व हरा मिट्टी के रंग व धातु के उपयोग से तैयार किया करते थे।

चटाईयों के अतिरिक्त उन्होंने हथकरघे पर बने सस्ते कपड़े पर चिकनी मिट्टी व गोबर का घोल पोतकर उसके ऊपर सफेद चूना पोतकर काम किया करते थे। इसके अतिरिक्त जामिनी राय ने अपने कुछ चित्रों में रेखा के विशुद्ध तत्वों व रूपाकार में चरम अमूर्तिकरण का भी प्रयोग किया है। उन्होंने सादे सफेद रंग की पृष्ठभूमि पर गहरे काले रंग की सहायता से इन चित्रों को बनाया है। चित्र में कम से कम रेखाओं का प्रयोग करते हुए रेखा को अत्याधिक लयात्मक रूप दिया है और इन्हीं पतली व मोटी रेखाओं से बनी मानवाकृति अपने आप में एक अलग ही अमूर्त रचना को जन्म देती है। सादे पार्श्व में केवल तूलिका की सहायता से रेखा बनाए गए इन चित्रों में गोलाई लिये हुए सरलीकृत रेखा की गुणवत्ता स्पष्ट प्रकट होती है।

रेखांकन पर विशेष ध्यान देने के साथ–साथ जामिनी राय ने पशुओं के अंकन में भी कई सफल प्रयोग किये। उन्होंने पशु प्रधान वाले अनगिनत चित्रों का निर्माण किया। जामिनी राय ने अपने चित्रों में पशु पक्षियों के अंकन में उनकी विशेषता को रखते हुए उनको लयात्मक रेखा व अलंकरण के साथ प्रस्तुत करके, एक अलग रूप दिया। कुछ चित्रों में जामिनी राय ने पशुओं का अंकन प्रागैतिहासिक कालीन चित्रों के समान किया है परन्तु साथ ही उसमें अपनी विशिष्ट शैली के लक्षणों को भी युक्त किया।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पशु आकृतियों की लम्बी श्रृंखला बना लेने के पश्चात् उन्होंने रेखांकन चित्र विधि को सपाट रंग प्रयोग की तकनीक में मिश्रित करके एक अभिनव शैली का विकास किया। उन्होंने पटों और लोक खिलौनों में प्रयुक्त आकार तथा तत्वों को अपनाकर अपने रूपाकारों को सशक्त मोटी रेखाओं से घिरा हुआ अंकित किया। जामिनी राय ने अपने चित्रों में लोक खिलौनों की भांति मानव शरीर का अंकन करना शुरू किया तथा खिलौनों का अंकन भी किया। खिलौनों के अंकन व खिलौनेनुमा शरीर वाले मानव के अंकन में उन्होंने बहुत ही सूझ–बूझ का प्रयोग किया। खिलौनों में निर्जीविता तथा खिलौनेनुमा आकृतियों में सजीविता देने का सफल प्रयास जामिनी राय ने किया। यह उनके चित्रों की एक बहुत बड़ी विशेषता है। इसी प्रकार पशुओं का अंकन व पशुओं का खिलौने के रूप में अंकन के कार्य में अन्तर स्पष्ट प्रकट होता है।

जामिनी राय के चित्रों के विषय वस्तु, तकनीकी व उनकी शैली इन सबमें समय के साथ–साथे रहे है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1 विष्णु डे व जॉन इर्विन, जामिनी राय, पृ0 24
2 जवाहर गोयल, समकालीन कला, संख्या 7–8, पृ0 10
3 संध्या पाण्डेय, आर0पी0पाण्डेय, भारतीय कला पुर्नजागरण एवं चित्रकार, पृ0 46
4 प्रशान्त डे, द टू ग्रेट इण्डियन आट्रिस्ट, पृ0 2
5 नैन भटनागर, समकालीन कला, अंक 24, पृ0 14
6 हमडी बे, द टू इण्डियन आट्रिस्ट, पृ0 31
7 जॉन इर्विन, जामिनी राय एण्ड द इण्डियन ट्रेडीशन, पृ0 38
8 राजेन्द्र वाजपेयी, मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार, पृ0 68